चयन आधारित क्रेडिट पद्धति

CHOICE BASED CREDIT SYSTEM

त्रिवर्षीय स्नातक हिंदी सामान्य पाठ्यक्रम (कोर कोर्स)

B. A. (PROGRAMME) HINDI CORE COURSE (CC)

DSC-1(A) [Credit - 6] (L - 5, T - 1)

[व्याख्यान : 14 X 5 = 70 (5 क्रेडिट) शिक्षण 14 X 1 = 14 (1 क्रेडिट)]

Total Marks-100 (Th-80+IA-20)

हिंदी साहित्य का इतिहास

हिंदी साहित्य के विद्यार्थियों को हिंदी साहित्य के इतिहास का ज्ञान जरूरी है। हिंदी साहित्य लेखन की परंपरा, काल विभाजन, नामकरण और आदिकालीन साहित्य की जानकारी जब तक नहीं होगी; तब तक विद्यार्थियों का ज्ञान अधूरा माना जाएगा। उसी तरह हिंदी साहित्य का स्वर्णयुग कहा जाने वाला भक्तिकाल के कालजयी रचनाकारों कबीरदास, जायसी, सूरदास और तुलसीदास के साहित्य के बारे में भी जानना जरूरी है। स्वतंत्रता आंदोलन में हिंदी के योगदान को भी नकारा नहीं जा सकता है; इसमें पत्रकारिता का क्या योगदान था और हिंदी में गद्य लेखन की शुरूआत कब से होती है? इन सारे प्रश्नों के जवाब इस पत्र में उपलब्ध है। यहीं कारण है कि इस पत्र को पाठ्यक्रम में रखा गया है।

इकाई -1 L-18, T-4, अंक - 20

हिंदी साहित्य - काल विभाजन, नामकरण,
आदिकालीन काव्य-धाराएँ - सिद्ध, नाथ एवं जैन साहित्य, रासो काव्य, लौकिक साहित्य,
आदिकालीन हिंदी साहित्य की सामान्य विशेषताएं,

इकाई -2 L-18, T-4, अंक - 20

भक्ति काल : परिस्थितियाँ और विशेषताएं,
भक्ति काव्यधारा : निर्गुण एवं सगुण प्रमुख कवियों का परिचय, (जायसी, कबीर, सूर, तुलसी)
रीतिकाल : सामान्य परिचय एवं काव्यधाराएँ, (रीतिबद्ध, रीतिसिद्ध तथा रीतिमुक्त कवि),
रीतिकाल की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि,

इकाई -3 L-18, T-4, अंक - 20

1857 का स्वतत्रता संघर्ष और हिंदी नवजागराण,
आधुनिक काल : परिस्थितियाँ एवं प्रमुख धाराओं का सामान्य परिचय, (भारतेन्दुयुग, द्विवेदीयुग, छायावाद, प्रगतिवाद, प्रयोगवाद, नई कविता,)

इकाई -4 L-16, T-2, अंक - 20

हिंदी में गद्य विधाओं का उद्भव और विकास : उपन्यास, कहानी, नाटक, निबंध,

सहायक ग्रंथ -

1. हिंदी साहित्य का इतिहास - सं० डॉ० नगेंद्र, - नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली,
2. हिंदी साहित्य का इतिहास- आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, नागरी प्रचारणी सभा - वाराणसी,
3. हिंदी साहित्य का सुबोध इतिहास - बाबू गुलाब राय, लक्ष्मी नारायण प्रकाशन, आगरा,
4. हिंदी साहित्य का इतिहास - डॉ० विजयेन्द्र स्नातक - साहित्य अकादमी, नई दिल्ली,
5. आधुनिक हिंदी साहित्य का इतिहास - डॉ० बच्चन सिंह, लोकभारती प्रकाशन, इलाहावाद,

त्रिवर्षीय स्नातक हिंदी सामान्य पाठ्यक्रम (कोर कोर्स)

B. A. (PROGRAMME) HINDI CORE COURSE (CC)

DSC-1(B) [Credit - 6] (L - 5, T - 1)

[व्याख्यान : 14 X 5 = 70 (5 क्रेडिट) शिक्षण 14 X 1 = 14 (1 क्रेडिट)]

Total Marks-100 (Th-80+IA-20)

मध्यकालीन हिंदी कविता

हिंदी काव्य की एक अविच्छिन्न धारा आदिकाल से प्रवाहित होती रही है। हिंदी साहित्य को विभिन्न काल-खण्डों में बाँटा गया है। आदिकालीन काव्य के अंतःस्रोत के काव्य केवल ; सुदृढ़ ही नहीं हुआ ; बल्कि स्वर्णयुग के गरिमामय महिमा से मंडित होने का श्रेय भी प्राप्त किया। हिंदी का यह स्वर्णमय कालखंड भक्तिकाव्य है। भक्तिकाल में एक अन्य प्रवृति का विकास हुआ , वह था रीतिकाव्य। रीति काव्यधारा ने हिंदी काव्य प्रवाह में एक नया रंग घोला। अतः इस काल का सम्यक अध्ययन कर इस काल के कवियों एवं उनके द्वारा सृजित कविताओं का अध्ययन इस पत्र का मुख्य उद्देश्य है।

पाठ्यपुस्तक - 1. मध्यकालीन काव्य संग्रह: प्रस्तुतकर्ता - केंद्रीय हिंदी सस्थान आगरा, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी,

2. काव्य सुषमा - सं० सत्यकाम विद्यालंकार , नया साहित्य, कश्मीरी गेट दिल्ली,

3. मीराबाई की सम्पूर्ण पदावली - सं० डॉ० रामकिशोर शर्मा, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद,

इकाई -1 : L-18, T-4, अंक - 20

कबीर - पद - 1. दुलहिनीं गावहु मंगलाचार, हम घरि आए राजा राम भरतार,
2. अवधू मेरा मनु मतिवारा , 3. माया महा ठगिनी हम जानी,

मीराबाई - 1. पतियाँ मैं कैसे लिखूँ, लिख्योरि न जाय, 2. पायो जी मैं तो रामरतन धन पायो,
3. घायल री गति घायल जाण्या,

इकाई -2 : L-18, T-3, अंक - 20

सूरदास - 1. मेरौ मन अनत कहाँ सुख पावै, 2. किलकत कान्ह घुटुरूवनि आवत,
3 हमारै हरि हारिल की लकरी , 4. अति मलीन बृषभानु-कुमारी,

तुलसीदास -

कवितावली - 1. एहि घाटतें थोरिक दूरि अहै कटि लौं जलु थाह देखाइहौं जू,

2. खेती न किसान को भिखारी को न भीख, बलि,

विनयपत्रिका - 1. रामको गुलाम, नाम रामबोला राख्यों राम,

2 . ऐसी मूढ़ता या मनकी,

इकाई -3 : L-18, T- 4, अंक - 20

रसखान - 1. मानुष हौं तौ वही 'रसखानि', बसौं ब्रज गोकुल गाँव के ग्वारन,

2. या लकुटी अरू कामरिया पर ,राज तिहूँ पुर को तजि डारौं,

3. मोरपंखा सिर ऊपर राखि हौं , गुंज की माल गरे पहिरौंगी,

बिहारी - दोहा संख्या- 01, 02, 03, 06, 09, 10, 13, 20, 22, 26 = 10, **(मध्यकालीन काव्य संग्रह)**

इकाई - 4 : L-16, T-3, अंक - 20

भूषण - 1. इन्द्र जिमी जंभ पर, बाड़व सुअंभ पर,

2. ऊँचे घोर मन्दर के अंदर रहनवारी , **(काव्य सुषमा)**

घनानंद - 1. परकाजहि देह कों धारि फिरौ परजन्य जथारथ ह्वै दरसौ,

2. अति सूधो सनेह को मारग है जहाँ नेकु सयानप बाँक नहीं ,

सहायक ग्रंथ :

1. रसखान ग्रंथावली - प्रो० देशराज सिंह भाटी, अशोक प्रकाशन, नई सड़क, दिल्ली,
2. घनानंद कवित - सं० आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र, वाणी वितान प्रकाशन, वाराणसी,
3. बिहारी सतसई - सं० आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र, वाणी वितान प्रकाशन, वाराणसी,
4. सूरदास ग्रंथावली - किशोरीलाल गुप्त, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद,
5. कवितावली - गोस्वामी तुलसीदास, गीता प्रेस, गोरखपुर,
6. विनयपत्रिका - गोस्वामी तुलसीदास, गीता प्रेस, गोरखपुर,
7. कबीर ग्रंथावली - सं० श्यामसुंदर दास, नागरी प्रचारणी सभा, वाराणसी,

त्रिवर्षीय स्नातक हिंदी सामान्य पाठ्यक्रम (कोर कोर्स)

B. A. (PROGRAMME) HINDI CORE COURSE (CC)

DSC-1(C) [Credit - 6] (L - 5, T - 1)

[व्याख्यान : 14 X 5 = 70 (5 क्रेडिट) शिक्षण 14 X 1 = 14 (1 क्रेडिट)]

Total Marks-100 (Th-80+IA-20)

आधुनिक हिंदी कविता

हिंदी साहित्य का आधुनिक काल का प्रारम्भ 1850 ई० से माना जाता है जिसका मूल कारण पाश्चात्य प्रभाव रहा है। पाश्चात्य संसाधनों से रूबरू होने के कारण हमारी सोच में परिवर्तन होने लगा। इस काल में भारत में राष्ट्रीय बीज अंकुरित हुए। छापेखाने का आविष्कार हुआ जिसका प्रभाव प्रत्यक्ष और परोक्ष रूप से हिंदी काव्य पर भी पड़ा। बीसवीं शताब्दी भारत के लिए उथल-पुथल वाला काल रहा है। हर क्षेत्र में यहाँ बदलाव देखने को मिलता है। साहित्यिक दृष्टि से देखें तो जितना परिवर्तन पिछले सौ वर्षों में नहीं हुआ था; उतना बदलाव अगले 50 वर्षों में दिखने को मिला। इस काल में भारत को आजाद कराने की छटपटाहट और आजादी के बाद राजनीति से बहुत जल्द हीं मोहभंग होने लगा। जिसके प्रति एक विद्रोही स्वर स्वाधीनोत्तर कविताओं में देखने को मिलती है। अतएव इस काल के विषय में सम्यक अनुशीलन करने तथा जानकारी हासिल करना ही इस पत्र का मुख्य उद्देश्य है।

पाठ्यपुस्तक - आधुनिक काव्य संग्रह - सं० रामवीर सिंह, प्रस्तुतकर्ता - केंद्रीय हिंदी सस्थान आगरा, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी,

इकाई - 1 : L-18, T-4, अंक - 20

भारतेन्दु हरिश्चंद्र- हिंदी भाषा - 15 दोहे (1 से 15) तक,

अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' -

प्रियप्रवास - **(षष्ट सर्ग)** प्रथम 6 छंद,

इकाई - 2 : L-18, T-4, अंक - 20

मैथिलीशरण गुप्त -

यशोधरा - 1, 2,

जयशंकर प्रसाद - 1. आँसू, 2. हे! लाज भरे सौन्दर्य बता दो, 3. ले चल वहाँ भुलावा देकर,

इकाई - 3 : L-17, T-3, अंक - 20

सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' - 1. जूही की कली, 2. संध्या सुंदरी, 3. बाँधो न नाव,

सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय' - 1. बावरा अहेरी, 2. साँप के प्रति, 3. हमारा देश,

इकाई - 4 : L-17, T-3, अंक - 20

नागार्जुन - 1. कालीदास, 2. बादल को घिरते देखा है,

नरेश मेहता - 1. किरन- धेनुएँ, 2. विडम्बना,

सहायक ग्रंथ :

1. छायावाद - डॉ0 नामवर सिंह, राजकमल प्रकाशन- नई दिल्ली,
2. आधुनिक साहित्य की प्रवृतियाँ - डॉ0 नामवर सिंह, राजकमल प्रकाशन- नई दिल्ली,
3. आधुनिक हिंदी साहित्य का इतिहास - डॉ0 बच्चन सिंह, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद,

'

त्रिवर्षीय स्नातक हिंदी सामान्य पाठ्यक्रम (कोर कोर्स)

B. A. (PROGRAMME) HINDI CORE COURSE (CC)

DSC-1(D) [Credit - 6] (L - 5, T - 1)

[व्याख्यान : 14 X 5 = 70 (5 क्रेडिट) शिक्षण 14 X 1 = 14 (1 क्रेडिट)]

Total Marks-100 (Th-80+IA-20)

हिंदी गद्य साहित्य

संस्कृत साहित्य में गद्य की सुदीर्घ परंपरा रही है, लेकिन हिंदी में इसका आगमन बहुत बाद में होता है। 19 वीं शताब्दी के बाद हिंदी में गद्य साहित्य की इतनी उन्नति हुई कि इस काल को गद्य काल की संज्ञा दे दी गई । आधुनिक काल के पहले गद्य अविकसित भले हीं रहा है , लेकिन उसका अभाव नहीं रहा है। इसके विकास में भारतेन्दु युग का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। हिंदी गद्य का प्रौढ़तम रूप द्विवेदी युग के परवर्ती युग में दिखाई पड़ता है। गद्य के विभिन्न विधाओं की दृष्टि से भी यह युग वैविध्य पूर्ण दिखाई पड़ता है। इस पत्र में इस युग की गद्य-साहित्य की समस्त विधाओं को नहीं ; केवल उपन्यास, कहानी और निबंध को जगह दी गई है। इसे पढ़कर विद्यार्थी अपने गद्य साहित्य की जानकारी को बढ़ा ` सकेंगे।

इकाई -1 L-18, T-4, अंक - 20

हिंदी उपन्यास का विकास, हिंदी उपन्यास के इतिहास में जैनेन्द्र का स्थान,

इकाई -2 L-18, T-4, अंक - 20

त्यागपत्र - जैनेन्द्र (उपन्यास),

इकाई -3 L-18, T-3, अंक - 20

नमक का दरोगा - प्रेमचंद, (कहानी)

आकाशदीप - जयशंकर प्रसाद,

परदा - यशपाल,

वापसी - उषा प्रियम्वदा,

इकाई -4 L-18, T-3, अंक - 20

हिंदी निबंध के विकास : आचार्य रामचन्द्र शुक्ल एवं आचार्य हाजारी प्रसाद द्विवेदी का योगदान एवं स्थान,

लोभ एवं प्रीति - आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ,

कुटज - आचार्य हाजारी प्रसाद द्विवेदी,

सहायक ग्रंथ : -

1. हिंदी उपन्यास का इतिहास - डॉ० गुलाब राय, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली,
2. हिंदी उपन्यास का विकास - मधुरेश, सुमित प्रकाशन, इलाहाबाद,
3. हिंदी निबंध का विकास - मधुरेश, सुमित प्रकाशन, इलाहाबाद,
4. हिंदी निबंध और निबंधकार - डॉ० रामचन्द्र तिवारी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी,
5. हिंदी कहानी का इतिहास - डॉ० गुलाब राय, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली,
6. कहानी नई कहानी- डॉ० नामवर सिंह, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद,
7. हिंदी कहानी संदर्भ और प्रकृति- डॉ० देवी शंकर अवस्थी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
8. हिंदी का गद्य साहित्य - डॉ० रामचन्द्र तिवारी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी,

ABILITY ENHANCEMENT COMPULSORY COURSE (AECC)

योग्यता संवर्द्धन अनिवार्य पाठ्यक्रम

HINDI (PROGRAMME) CORE COURSE (CC)

COURSE AEC -1 [Credit -2] (L - 1, T - 1)

[व्याख्यान : 14 X 1 = 14 (1क्रेडिट) शिक्षण 14 X 1 = 14 (1क्रेडिट)]

Total Marks-50 (Th-40+IA-10)

हिंदी **भाषा और व्याकरण**

भाषा दो व्यक्तियों के बीच संप्रेषण की माध्यम है। भाषा के बिना मनुष्य गूंगा है। जीवित प्राणियों में एक मनुष्य ही ऐसा है जो अपनी भाषा को संरक्षित रखा है। मनुष्यों में भी अलग-अलग देशों , प्रदेशों और प्रदेशों में भी अलग-अलग क्षेत्रों की अपनी भाषा होती है। ऐसे परिस्थितियों में मनुष्य इशारोंकी सहायता से अपना काम चलाता है , लेकिन उसे भाषा की संज्ञा नहीं दी जा सकती है। इस पत्र में भाषा की विशेषताओं पर प्रकाश डाला गया है। व्यक्ति जब भाषा का प्रयोग करता है तो उसे कई प्रकार की कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है, जैसे- उच्चारण की समस्या, लिंग निर्धारण की समस्या, वाक्यों के गठन, संप्रेषण। इसी बात को ध्यान में रखकर इसे पाठ्यक्रम में स्थान दिया गया है।

इकाई -1 L-5, T-2 अंक-10

भाषा की परिभाषा - प्रकृति एवं विविध रूप, हिंदी भाषा की विशेषताएँ,

इकाई -2 L-5, T-2 अंक-10

हिंदी की वर्ण व्यवस्था : स्वर एवं व्यंजन - प्रकार एवं प्रयोग, ऊष्म, अल्पप्राण, महाप्राण, घोष , अघोष,

इकाई -3 L-5, T-2 अंक-10

शब्द व्यवस्था : संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया, विशेषण, उपसर्ग, प्रत्यय,संधि, कारक, शब्दस्रोत : तत्सम , तद्भव, देशज, विदेशज/आगत,

इकाई -4 L-5, T-2 अंक-10

वाक्य व्यवस्था : वाक्य, उपवाक्य - स्वरूप एवं भेद,

सहायक ग्रंथ :

1. हिंदी व्याकरण और रचना - डॉ० वासुदेव नन्दन प्रसाद, भारती भवन, पटना,
2. हिंदी भाषा- डॉ० हरदेव बाहरी, अभिव्यक्ति प्रकाशन, इलाहाबाद,
3. हिंदी की प्रकृति और शुद्ध प्रयोग - ब्रजमोहन,
4. भाषा शिक्षण - डॉ० रवीद्र नाथ श्रीवास्तव,
5. हिंदी का विवरणात्मक व्याकरण - डॉ० लक्ष्मी नारायण शर्मा,
6. हिंदी भाषा - डॉ० भोलानाथ तिवारी, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली,
7. ऐतिहासिक भाषा विज्ञान और हिंदी भाषा - रामविलास शर्मा, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली,
8. हिंदी भाषा, व्याकरण और रचना - अर्जुन तिवारी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी,

SKILL ENHANCEMENT COURSE (SEC)

(कौशल संवर्द्धन पाठ्यक्रम)

त्रिवर्षीय स्नातक हिंदी सामान्य पाठ्यक्रम (कोर कोर्स)

B. A. HINDI (PROGRAMME) CORE COURSE (CC)

COURSE SEC-1 [Credit - 2] (L - 1, T - 1)

[व्याख्यान : 14 X 1 = 14 (1 क्रेडिट) शिक्षण 14 X 1 = 14 (1 क्रेडिट)]

Total Marks-50 (Th-40+IA-10)

कार्यालयी हिंदी

कार्यालयों में दैनिक कामकाज में प्रयुक्त होने के कारण इसे कार्यालयी हिंदी कहा जाता है। इसे प्रशासनिक हिंदी भी कहा जाता है। आजादी से पूर्व अंगरेजी राजभाषा थी, लेकिन 14 सितंबर 1949 को सविधान द्वारा निर्णय लिया गया कि स्वाधीन भारत की अपनी भाषा होनी चाहिए। संविधान लागू होने के बाद हिंदी को संघ की राजभाषा घोषित किया गया, तब से प्रशासनिक कार्य व्यवस्था में हिंदी की शुरूआत हुई। कार्यालयी हिंदी के अंतर्गत हिंदी भाषा के विविध रूप, राजभाषा का स्वरूप, टिप्पण, आलेखन, पल्लवन, संक्षेपण, प्रशासनिक पत्रावली का निष्पादन, पारिभाषिक शब्दावली आदि आता है। जो हिंदी हम पढ़ते है वह साहित्यिक हिंदी है और जिसमें हम बातचीत करते हैं वह बोलचाल की हिंदी है। यह हिंदी उन सबसे अलग प्रयोजनमूलक है। इस पत्र को पढ़ने से सरकारी कार्यालयों में कामकाज करने में आसानी होगी।

इकाई -1 L-5, T-2, अंक - 10

हिंदी भाषा के विविध रूप - राष्ट्रभाषा, राजभाषा, जन भाषा,

शिक्षण माध्यम - भाषा, संचार भाषा, सर्जनात्मक भाषा, यांत्रिक भाषा,

इकाई -2 L-5, T-2, अंक - 10

राजभाषा का स्वरूप - भारतीय संविधान में राजभाषा संबंधी परिनियमावली का समान्य परिचय,

इकाई -3 L-5, T-2, अंक - 10

पत्रों के प्रकार , पत्राचार, प्रशासनिक पत्रावली की निष्पादन प्रक्रिया, टिप्पण, प्रारूपण/आलेखन, पल्लवन , संक्षेपण,

इकाई -4 L-5, T-2, अंक - 10

प्रशासनिक शब्दावली,

कार्यालयी प्रयोजन में विभिन्न यांत्रिक उपकरणों का अनुप्रयोग - कंप्यूटर, लैपटाप, टैबलेट, टेलीप्रिन्टर , टेलेक्स, वीडियो कान्फ्रेंसिंग,

सहायक ग्रंथ :

1. कार्यालयी हिंदी - डॉ० विजयपाल सिंह, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी,
2. प्रयोजनमूलक हिंदी - विनोद गोदरे, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली,
3. प्रयोजनमूलक हिंदी : सिद्धांत और प्रयोग - दंगल झाल्टे, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली,
4. प्रयोजनमूलक हिंदी की भूमिका - कैलाशनाथ पाण्डेय, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद,

SKILL ENHANCEMENT COURSE (SEC)

(कौशल संवर्द्धन पाठ्यक्रम)

त्रिवर्षीय स्नातक हिंदी सामान्य पाठ्यक्रम (कोर कोर्स)

B. A. HINDI (PROGRAMME) CORE COURSE (CC)

COURSE SEC-2 [Credit - 2] (L - 1, T - 1)

[व्याख्यान : 14 X 1 = 14 (1 क्रेडिट) शिक्षण 14 X 1 = 14 (1क्रेडिट)]

Total Marks-50 (Th-40+IA-10)

अनुवाद विज्ञान

अनुवाद को विज्ञान की संज्ञा दी गई है। अनुवाद विज्ञान के साथ-साथ एक कला भी है। जब दो भाषा भाषी मिलते है , तो वे एक-दूसरे की भाषा को समझ नहीं पाते हैं , तब जाकर अनुवाद की आवश्यकता महसूस होती है। वहाँ तो अनुवादक से काम चल जाता है , लेकिन जब दो भाषाओं की कविताओं , कहानियों, निबंधों की बात आती है तो यह समस्या खड़ी हो जाती है कि अनुवाद - भाषिक , शाब्दिक, भावानुवाद, सारानुवाद, छायानुवाद , मुहावरों, लोकोक्तियों,के अनुवाद, कूटपदों के अनुवाद , कैसी होनी चाहिए और किसे सही माना जाय। विदेशी भाषाओं का हिंदी में अनुवाद और हिंदी का विदेशी भाषाओं में अनुवाद का मानदंड कैसा होना चाहिए। एक हीं साहित्य का अनुवाद दो अलग-अलग व्यक्ति दो अलग-अलग तरीके से करते हैं। इसके साथ हीं कार्यालयों की भाषा की अनुवाद , कैसे किया जाय। इन्हीं समस्याओं को ध्यान में रखकर इस पत्र को पाठ्यक्रम में स्थान दिया गया है।

इकाई - 1 L- 6, T- 2 **अंक - 10**

अनुवाद का तात्पर्य, अनुवाद के विभिन्न प्रकार - भाषांतरण, सारानुवाद,
अनुवाद के प्रमुख प्रकार- कार्यालयी, साहित्यिक, ज्ञान-विज्ञानपरक, विधिक, वाणिज्यिक।

इकाई - 2 L- 6, T- 2 **अंक - 10**

साहित्यिक अनुवाद के रूप - काव्यानुवाद, कथानुवाद, नाट्यानुवाद,
वैज्ञानिक तकनीकी शब्दावली का अनुवाद , मुहावरों/ लोकोक्तियों का अनुवाद,

इकाई - 3 L- 4, T- 2 **अंक - 10**

अनुवाद में पर्यवेक्षक की भूमिका, अनुवाद की सम्पादन प्रविधि, अनुवाद की अर्हता, अनुवादक के गुण

इकाई - 4 L- 4, T- 2 **अंक - 10**

दो प्रमुख कृतियों का हिंदी में किए गए अनुवाद की समीक्षा, भारत मे अनुवाद प्रशिक्षण के प्रमुख केंद्र, हिंदी अनुवाद का भविष्य,

सहायक ग्रंथ:

1. अनुवाद कला सिद्धान्त और प्रयोग - डॉ० कैलाशचंद भाटिया, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद,
2. अनुवाद विज्ञान - डॉ० भोलानाथ तिवारी, वाणी प्रकाशन नई दिल्ली,
3. अनुवाद विज्ञान - डॉ० राजमणि शर्मा, हरियाणा साहित्य अकादमी, पंचकुला,
4. अनुवाद विज्ञान : सिद्धान्त और प्रयोग - डॉ० राजमणि शर्मा, वाणी प्रकाशन नई दिल्ली,
5. अनुवाद के विविध आयाम - डॉ० पूरंचन्द टंडन,
6. अनुवाद सिद्धान्त की रूपरेखा - डॉ० सूरज कुमार,
7. अनुवाद के सिद्धान्त - आर० आर० रेड्डी, अनुवादक - जे एल रेड्डी,

SKILL ENHANCEMENT COURSE (SEC)

(कौशल संवर्द्धन पाठ्यक्रम)

त्रिवर्षीय स्नातक हिंदी सामान्य पाठ्यक्रम (कोर कोर्स)

B. A. HINDI (PROGRAMME) CORE COURSE (CC)

COURSE SEC-3 [Credit - 2] (L - 1, T - 1)

[व्याख्यान : 14 X 1 = 14 (1 क्रेडिट) शिक्षण 14 X 1 = 14 (1 क्रेडिट)]

Total Marks-50 (Th-40+IA-10)

भाषा कम्प्यूटिंग

भाषा कम्प्यूटिंग को कौशल-वर्धन पाठ्यक्रम के अंतर्गत रखने से विद्यार्थी अत्यंत लाभान्वित होंगे। साहित्य के विद्यार्थी को आज सैद्धांतिक ज्ञान के साथ साथ व्यवहारिक ज्ञान की भी आवश्यकता है। वर्तमान के साथ कदम से कदम मिलाने के लिए हिंदी भाषा-साहित्य के साथ कम्प्यूटर का ज्ञान होना भी जरूरी है। हिन्दी टाइपिंग आज के जमाने में एक आवश्यकीय तत्व बन चुका है, इसकी प्रासंगिकता को नकारा नहीं सकता है। इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य और इसकी प्रमुख उपलब्धियाँ कुछ प्रकार हैं- विद्यार्थियो को साहित्य के साथ साथ कंप्यूटर तथा हिंदी टाइपिंग का ज्ञान भी प्राप्त होगा । कंप्यूटर की मुद्रण प्रणाली के साथ डाटा प्रविष्टि , स्मृति, सूचना संग्रहण आदि के बारें में जानने का अवसर प्राप्त होगा। संचार प्रोद्योगिकी की प्रयोजनीय शब्दावली तथा संचार भाषा के रूप में हिंदी की उपलब्धियों के बारें भी जानकारी प्राप्त की जा सकती है। कम्प्यूटर में हिंदी के विभिन्न अनुप्रयोग तथा कम्प्यूटर अनुवाद आदि के बारें भी जानने का मौका मिलेगा।

इकाई -1 L- 5, T- 2 **अंक - 10**

कम्प्यूटर प्रबंधन : हार्डवेयर, सॉफ्टवेर,
प्रमुख एप्लिकेशन पैकेज , वेवसाइट, ईमेल,

इकाई -2 L- 5, T- 2 **अंक - 10**

मल्टीमीडिया की कार्य प्रणाली :

कम्प्यूटर में डाटा प्रविष्टि, स्मृति, (मेमोरी), कम्प्यूटर मुद्रण,

इकाई -3 L- 5, T- 2 **अंक - 10**

सूचना प्रौद्योगिकी का स्वरूप,

संचार प्रौद्योगिकी की प्रयोजनीय शब्दावली,

संचार भाषा के रूप में हिंदी की उपलब्धियां,

इकाई -4 L- 5, T- 2 **अंक - 10**

कम्प्यूटर में हिंदी के विभिन्न अनुप्रयोग,

कम्प्यूटर अनुवाद,

सहायक ग्रंथ :

1. हिंदी भाषा और कंप्यूटर- संतोष गोयल, श्री नटराज प्रकाशन,
2. कम्प्यूटर और हिन्दी - हरिमोहन, सातवाँ संस्करण तक्षशीला प्रकाशन,
3. बेसिक ऑफ कम्प्यूटर एंड इन्फॉर्मेशन टेक्नोंलोजी, संदीप नागवंशी, कैलाश पुस्तक सदन, भोपाल,
4. कम्प्यूटर के सिद्धान्त प्रयोग और भाषा - डॉ० पी० के० शर्मा, डाइनेमिक पब्लिकेशन,

SKILL ENHANCEMENT COURSE (SEC)

(कौशल संवर्द्धन पाठ्यक्रम)

त्रिवर्षीय स्नातक हिंदी सामान्य पाठ्यक्रम (कोर कोर्स)

B. A. HINDI (PROGRAMME) CORE COURSE (CC)

COURSE SEC-4 [Credit - 2] (L - 1, T - 1)

[व्याख्यान : 14 X 1 = 14 (1 क्रेडिट) शिक्षण 14 X 1 = 14 (1 क्रेडिट)]

Total Marks-50 (Th-40+IA-10)

समाचार संकलन और लेखन

आधुनिक समाज में पत्रकारिता की भूमिका महत्वपूर्ण हैं। छात्र इस पत्र के माध्यम संचार माध्यमों की विशिष्टता को पहचान सकेंगे। समाचार लेखन जैसे चुनौती भरा कार्य से जुड़ी मूलभूत पक्षों की जानकारी भी इस पत्र में मिल सकेगी। समाचार लेखन से संबन्धित तथ्यों के चयन की प्रक्रिया, समाचार लेखन में संवाददाता की अहम भूमिका तथा समाचार लेखन का सर्वोत्तम सिद्धांतों की जानकारियाँ विद्यार्थियों में रूचि उत्पन्न करने में सहायक सिद्ध होंगे। समाज में चलनेवाली गतिविधियों एवं हलचलों का दर्पण पत्रकारिता के प्रति आकर्षण पैदा कराना, शैक्षिक लक्ष्यों और बहुआयामी समस्याओं में स्वयं की भूमिका का तलाश कराना इस पत्र का मूल उद्देश्य है।

इकाई -1 L-5, T-2, **अंक -10**

समाचार : अवधारणा परिभाषा, समाचार के स्रोत,

समाचार संग्रह पद्धति, लेखन प्रक्रिया - सिद्धान्त और मार्गदर्शक बातें,

इकाई -2 L-5, T-2, **अंक -10**

समाचार का वर्गीकरण, खोजी, व्याख्यात्मक, अनुवर्तन समाचार,

संवाददाता : भूमिका, अर्हता, श्रेणियाँ, प्रकार्य एवं व्यवहार - संहिता,

इकाई -3 L-5, T-2, **अंक -10**

रिपोर्टिंग के क्षेत्र एवं प्रकार,

रिपोर्टिंग: कला और विज्ञान के रूप में विश्लेषण, वस्तुपरकता और भाषा शैली।

इकाई -4 L-5, T-2, **अंक -10**

इलेक्ट्रोनिक माध्यमों से प्राप्त समाचारों का पुनर्लेखन,
लीड: अर्थ, प्रकार, विशेषता, महत्व,
शीर्षक : अर्थ, प्रकार, लिखने की कला, महत्व,

सहायक ग्रंथ:-

1. समाचार फीचर लेखन और सम्पादन कला - डॉ o हरिमोहन, तक्षशीला प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली,
2. पत्रकारिता का परिचय - डॉ o हरिमोहन, तक्षशीला प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली,
3. नई पत्रकारिता और समाचार लेखन - सविता चड्ढा - तक्षशीला प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली,
4. दृश्य- श्रव्य माध्यम लेखन - डॉo राजेन्द्र मिश्र, तक्षशीला प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली,
5. समाचार पत्रों की भाषा - माणिक मृगेश, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली,

DISCIPLINE SPECIFIC ELECTIVE COURSE (DSE)

(विषय आधारित ऐच्छिक पाठ्यक्रम)

त्रिवर्षीय स्नातक हिंदी सामान्य पाठ्यक्रम (कोर कोर्स)

HINDI (PROGRAMME) CORE COURSE (CC)

COURSE DSE-1 [Credit - 6] (L - 5, T - 1)

[व्याख्यान : 14 X 5 = 70 (5 क्रेडिट) शिक्षण 14 X 1 = 14 (1 क्रेडिट)]

Total Marks-100 (Th-80+IA-20)

कबीरदास

निर्गुण भक्ति काव्यधारा के प्रमुख संत कवि कबीर जैसा व्यक्तित्व लेकर दूसरा कोई और कवि पैदा नहीं हुआ। कबीर ने अपनी कविताओं के माध्यम से जन साधारण का ध्यान अपनी ओर खींचा है। अपने निर्भीक वाणियों के द्वारा कबीर ने समाज में फैले कुरीतियों जैसे - जाति , धर्म, संप्रदाय, ऊंच-नीच, भेद-भाव, और वाहयचार के खिलाफ जितनी मुस्तैदी से आवाज उठाई है और अपनी कविताओं से सबको लपेटा है ; उतना उस काल में कौन कहे आज भी किसी कवि में हिम्मत नहीं है। सामाजिक जीवन में रहकर भी सामाजिक बुराईयों से कैसे बचा जा सकता है , वह कबीर से सीखने की जरूरत है। आज के युग में भी कबीर उतने ही प्रासांगिक हैं ; जितना पहले थे। उम्मीद है; छात्र कबीर की व्यक्तित्व और कविताओं से प्रभावित होंगे। इस बात को ध्यान में रखते हुए इस पत्र को पाठ्यक्रम में रखा गया है।

पाठ्यपुस्तक - कबीर ग्रंथावली - सं० श्यामसुंदर दास - नागरी प्रचारणी सभा, वाराणसी,

इकाई -1 L-18, T-4, अंक - 20

निर्गुण काव्यधारा में कबीर का स्थान, प्रासंगिकता, भाषा, बाहयाचार एवं धार्मिक मत,

इकाई -2 L-18, T-4, अंक - 20

पद संख्या - 1. दुलहनीं गावहु मंगलाचार- 01, 2. हम न मरै मरिहै संसारा - 43,
3. हम तो एक एक करी जांनां- 55 , 4. मन रे तन कागद का पुतला - 92,
5. हरी जननीं मैं बालिक तेरा - 111, 6. अब मोहि राम भरोसा तेरा - 114,

इकाई -3 L-18, T-3, अंक - 20

पद संख्या - 7. हरी मेरा पीव माई -117, 8. मन रे हरि भजि हरि भजि हरि भजि भाई 122, 9. माधौ कब करिहौ दया - 308, 10. मन रे रामं सुमिरि, रामं सुमिरि, रामं सुमिरि भाई -320, 11. जागहु रे नर सोवहु कहा - 351, 12. न कछु रे न कछू रामं बिनां - 399,

इकाई -4 L-16, T-3, अंक - 20

साखी-20:

साखी संख्या - 20, 36, 39, 43, 46, 52, 57, 76, 81, 104, 140, 148, 154, 155, 169, 173, 176, 180, 181, 187,

सहायक ग्रंथ -

1. कबीर - हजारी प्रसाद द्विवेदी - राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली,
2. कबीर ग्रंथावली (सटीक) - सं० राम किशोर शर्मा, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद,
3. कबीर - सं० विजयेन्द्र स्नातक - राधाकृष्ण प्रकाशन, इलाहाबाद,
4. कबीर मीमांसा - डॉ० रामचन्द्र तिवारी - लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद,
5. कबीर - अकथ कहानी प्रेम की - डॉ० पुरूषोत्तम अग्रवाल, राजकमाल प्रकाशन, नई दिल्ली,

DISCIPLINE SPECIFIC ELECTIVE COURSE (DSE)

(विषय आधारित ऐच्छिक पाठ्यक्रम)

त्रिवर्षीय स्नातक हिंदी सामान्य पाठ्यक्रम (कोर कोर्स)

HINDI (PROGRAMME) CORE COURSE (CC)

COURSE DSE-2 [Credit - 6] (L - 5, T - 1)

[व्याख्यान : 14 X 5 = 70 (5 क्रेडिट) शिक्षण 14 X 1 = 14 (1 क्रेडिट)]

Total Marks-100 (Th-80+IA-20)

तुलसीदास

विषयगत विशेष ऐच्छिक पाठ्यक्रम के संयोजन का एक विशेष महत्त्व है। मुख्य पाठ्यक्रम के साथ यह संबन्धित है। संत तथा कवि तुलसीदास की रचनाओं पर आधारित यह पाठ्यक्रम विद्यार्थियों के लिए अत्यंत लाभदायक सिद्ध होगा। उनके द्वारा लिखित भक्ति के पद सम्पूर्ण भक्ति साहित्य की अनमोल निधि हैं । उन्होंने **रामचरितमानस** की रचना कर तत्कालीन अशांत भारत में आदर्श और मर्यादा को पुनः स्थापित किया था। उनका काव्य लोकमंगल का काव्य है। इसीलिए आज भी तुलसीदास की रचनाएँ प्रासंगिक हैं। इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य और इसकी प्रमुख उपलब्धियाँ कुछ प्रकार हैं , तुलसीदास के असाधारण व्यक्तित्व पर प्रकाश डालना। **रामचरितमानस** के अध्ययन से विद्यार्थियों को आदर्श और मर्यादा के साथ साथ नैतिक ज्ञान भी प्राप्त होगा। **कवितावली** और **गीतावली** के माध्यम से तुलसीदास की काव्य प्रतिभा तथा भक्ति की जानकारी प्राप्त होगी। **विनयपत्रिका** हिंदी साहित्य की अनमोल निधि है। तुलसीदास ने **विनयपत्रिका** में दास्य भक्ति का अत्यंत सुंदर प्रदर्शन किया है। आत्मसमर्पण का ऐसा निदर्शन अन्यत्र दुर्लभ है ।

पाठ्यपुस्तक - 1. अयोध्या काण्ड - रामचरितमानस - तुलसीदास, गीताप्रेस, गोरखपुर,

2.कवितावली - तुलसीदास , गीताप्रेस, गोरखपुर,

3.गीतावली - तुलसीदास , गीताप्रेस, गोरखपुर,

4.दोहावली - तुलसीदास , गीताप्रेस, गोरखपुर,

5.विनय पत्रिका - तुलसीदास , गीताप्रेस, गोरखपुर,

इकाई -1, L-18, T-4 अंक 20

तुलसीदास : व्यक्तित्व और कृतित्व, रामचरितमानस : सामान्य परिचय,

इकाई -2, L-18, T-4 अंक 20

रामचरितमानस : अयोध्याकाण्ड (10 दोहा - चौपाई, संख्या 67 से 76 तक),

इकाई -3, L-18, T-3 अंक 20

कवितावली - (उत्तरकाण्ड 10 छंद, पद संख्या - 29, 35, 37, 44, 45, 60, 67, 73, 74, 84,) भक्ति काव्य में कवितवाली का स्थान ,

गीतावली - (बालकांड 10 पद, पद संख्या - 7, 8, 9, 10, 18, 24, 26, 31, 33, 36,) गीतावली का वर्ण्य विषय ,

इकाई -4, L-16, T-3 अंक 20

विनय पत्रिका - (10 पद, पद संख्या - 1, 5, 17, 30, 36, 41, 45, 72, 78, 79,) विनय पत्रिका में भक्ति ,

सहायक ग्रंथ :

1. तुलसी काव्य मीमांसा - डॉ० उदयभानु सिंह, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली,
2. तुलसीदास - सं० डॉ० उदयभानु सिंह, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली,
3. रामचरितमानस : अयोध्याकाण्ड - डॉ० योगेंद्र प्रसाद सिंह, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद,
4. तुलसीदास जीवनी और विचारधारा- डॉ० राजाराम रस्तोगी,
5. तुलसी और उनका काव्य - डॉ० उदयभानु सिंह, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली,
6. विनय पत्रिका : एक मूल्यांकन - डॉ० हरिचरण शर्मा,
7. तुलसीदास - डॉ० वासुदेव सिंह - अभिव्यक्ति प्रकाशन, इलाहाबाद,

DISCIPLINE SPECIFIC ELECTIVE COURSE (DSE)

(विषय आधारित ऐच्छिक पाठ्यक्रम)

त्रिवर्षीय स्नातक हिंदी सामान्य पाठ्यक्रम (कोर कोर्स)

HINDI (PROGRAMME) CORE COURSE (CC)

COURSE DSE -3 [Credit - 6] (L - 5, T - 1)

[व्याख्यान : 14 X 5 = 70 (5 क्रेडिट) शिक्षण 14 X 1 = 14 (1 क्रेडिट)]

Total Marks-100 (Th-80+IA-20)

हिंदी निबंध

निबंध आधुनिक गद्य साहित्य की एक लोकप्रिय और सशक्त विधा है। इस विधा का ढाँचा पाश्चात्य साहित्य से ग्रहण किया गया है। निबंध को आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने गद्य की कसौटी कहा है। भारतेन्दु युग में निबंध का ढाँचा ढीला-ढाला था, लेकिन महावीर प्रसाद द्विवेदी युग में आकार लोगों में चीजों को विवेकपूर्ण और वैज्ञानिक दृष्टि से देखने की प्रवृति बढ़ी और ज्ञान-विज्ञान के अनेक विषयों पर निबंध लिखे जाने लगा। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल इस काल में सशक्त निबंधकार के रूप में उभरे और यह काल शुक्ल युग से जाना जाने लगा। इस पत्र में बालकृष्ण भट्ट से लेकर कुबेरनाथ राय तक के निबंधों को लिया गया है, जिससे छात्रों को निबंध की एक सुदीर्घ परंपरा के बारे में जानकारी मिलेगी। साथ ही निबंध लिखने की क्षमता बढ़ेगी।

पाठ्यपुस्तक - 1. चिंतामणि भाग-1 - आचार्य रामचंद्र शुक्ल, इंडियन प्रेस पब्लिकेशंस प्रा० लि०, इलाहाबाद,
2. अशोक के फूल - आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद,

इकाई -1 L-18, T-4, अंक - 20

हिंदी निबंध का विकास, निबंध की परिभाषा,
साहित्य जनसमूह के ह्रदय का विकास है - बालकृष्ण भट्ट,
कछुआ धर्म- चंद्रधर शर्मा गुलेरी ,

इकाई -2 L-18, T-4, अंक - 20

कविता क्या है? - आचार्य रामचंद्र शुक्ल,

अशोक के फूल - आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी,

जीने की कला - महादेवी वर्मा,

इकाई -3 L-18, T-4, अंक -20

भारत की सांस्कृतिक एकता - रामधारी सिंह 'दिनकर,'

पगडंडियों का जमाना - हरीशंकर परसाई,

अस्ति की फुकार हिमालय - विद्यानिवास मिश्र,

इकाई -4 L-16, T-2, अंक - 20

अतीत: एक आत्म-मंथन - निर्मल वर्मा,

एक महाकाव्य का जन्म - कुबेर नाथ राय,

सहायक ग्रंथ : -

1. हिंदी निबंध का विकास - मधुरेश, सुमित प्रकाशन, इलाहाबाद,
2. हिंदी निबंध और निबंधकार - डॉ० रामचन्द्र तिवारी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी,
3. निबंध निकष - सं० डॉ० रामचन्द्र तिवारी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी,
4. हिंदी का गद्य साहित्य - डॉ० रामचन्द्र तिवारी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी,

DISCIPLINE SPECIFIC ELECTIVE COURSE (DSE)

(विषय आधारित ऐच्छिक पाठ्यक्रम)

त्रिवर्षीय स्नातक हिंदी सामान्य पाठ्यक्रम (कोर कोर्स)

HINDI (PROGRAMME) CORE COURSE (CC)

COURSE DSE - 4 [Credit - 6] (L - 5, T - 1)

[व्याख्यान : 14 X 5 = 70 (5 क्रेडिट) शिक्षण 14 X 1 = 14 (1 क्रेडिट)]

Total Marks-100 (Th-80+IA-20)

प्रयोजनपरक हिंदी

साहित्य भाषा को प्रतिष्ठा दे सकता है लेकिन विस्तार नहीं। भाषा को विस्तार देता है उसका प्रयोजनमूलक स्वरूप। प्रयोजनमूलक भाषा के रूप में हिंदी को वैश्विक प्रसार मिला हैं। हिंदी के प्रयोजनमूलक स्वरूप के विकास के कारण ही आज सम्पूर्ण भारत में ही नहीं बल्कि विश्व में भी हिंदी को समझने और बोलने वाले मिल जाते हैं। हिंदी का विकास आज राजकीय माध्यमों के द्‌वारा नहीं बल्कि दूसरे माध्यमों से हो रहा है, जिसमें चलचित्र, दूरदर्शन उद्‌योग और व्यापार का योगदान अधिक है। आज हिंदी के प्रयोजनमूलक संदर्भों से जो क्षेत्र जुड़े हुये हैं उसका ज्ञान अर्जित करने हेतु प्रयोजनपरक हिंदी को पाठ्‌यक्रम में स्थान दिया गया है।

इकाई -1 L-17, T-3, अंक - 20

प्रयोजनपरक हिंदी : अवधारणा, विविध क्षेत्र एवं सर्जनात्मक आयाम,

इकाई -2 L-18, T-4, अंक - 20

माध्यम लेखन : विविध संचार माध्यम - परिचय एवं कार्यविधि, श्रव्य माध्यम - रेडियो, श्रव्य दृश्य माध्यम - टेलीविज़न और फिल्म, तकनीकी माध्यम - इंटरनेट, मिश्र माध्यम - विज्ञापन, संचार माध्यमों की प्रकृति और चरित्र,

इकाई -3 L-17, T-3, अंक - 20

रेडियो लेखन - उद्घोषणा, कार्यक्रम-संयोजन (कंपेयरिंग), समाचार, धारावाहिक, फीचर, रिपोर्ट, रेडियो नाटक,

इकाई -4 L-18, T-4, अंक - 20

अनुवाद - परिभाषा, स्वरूप और महत्व, अनुवाद के प्रकार,

सहायक ग्रंथ-

1. प्रयोजनमूलक हिंदी - विनोद गोदरे, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली,
2. प्रयोजनमूलक हिंदी की नई भूमिका - डॉ0 कैलाशनाथ पाण्डेय, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद,
3. प्रयोजनमूलक हिंदी : सिद्धान्त और प्रयोग - दंगल झाल्टे, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली,
4. प्रयोजनमूलक हिंदी - दिनेश प्रसाद सिंह, मोतीलाल बनारसीदस प्रकाशन, पटना,
5. प्रयोजनमूलक हिंदी : सिद्धान्त और व्यवहार - डॉ० रघुनंदन प्रसाद, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी,

GENERIC ELECTIVE COURSE (GEC)

सामान्य (Generic) ऐच्छिक पाठ्यक्रम

त्रिवर्षीय स्नातक हिंदी सामान्य पाठ्यक्रम (कोर कोर्स)

HINDI (PROGRAMME) CORE COURSE (CC)

COURSE GEC-1 [Credit - 6] (L - 5, T - 1)

[व्याख्यान : 14 X 5 = 70 (5 क्रेडिट) शिक्षण 14 X 1 = 14 (1 क्रेडिट)]

Total Marks-100 (Th-80+IA-20)

आधुनिक भारतीय कविता

साहित्य अपने समय का सच्चे अर्थों में प्रतिबिंब होता है। भारत एक बहुभाषिक देश है। हर भाषा का अपना साहित्य होता है। कवि अपने समाज की गतिविधियों पर पैनी निगाह रखता है और समाज में जो गतिविधियां चलती रहती है ; उसे ही आधार बनाकर अपनी भावनाओं को शब्दबद्ध कर कविता का रूप देता है। एक भाषा के कवियों की संवेदना , भाव एवं विचार दूसरी भाषा के कवियों में भी एक साथ दिखाई देती है , यानी संवेदना, भाव एवं विचार पूरे देश के कवियों की एक ही होती है। इस पत्र में उत्तर से दक्षिण और पूरब से पश्चिम तक के कवियों की संवेदनाओं को एक साथ समझने का साझा प्रयास किया गया है। इस पत्र के माध्यम से छात्र हिंदी कविताओं के अलावा दूसरी भाषा के कवियों की कविताओं का एक साथ आनंद उठा सकेंगे। इसी उद्देश्य से इसे पाठ्यक्रम में रखा गया है।

पाठ्यपुस्तक - आधुनिक भारतीय कविता - सं० डॉ० अवधेश नारायण मिश्र एवं डॉ ० नन्द किशोर पाण्डेय , विश्वविद्यालय प्रकाशन , वाराणसी,

इकाई -1 L-20, T-4, **अंक 20**

असमिया कविता :

नवकांत बरूआ - धनशिरी के लिए दो स्तबक,

नीलमणि फूकन - कविता,

बांग्ला कविता:

रवीन्द्रनाथ टैगोर - शंख,

काजी नज़रूल इस्लाम - साम्यवाद,

इकाई -2 L-20, T-4, **अंक 20**

उर्दू कविता:

गालिब - गजल - 1, 2

फ़िराक गोरखपुरी - आज दुनिया पे रात भारी है,

संस्कृत कविता :

श्रीधर भास्कर वर्णेकर - न्याय देवता,

राधावल्लभ त्रिपाठी - पत्र मंजूषा,

इकाई -3 L-20, T-3, **अंक 20**

तमिल कविता:

सुब्रमण्यम भारती - स्वतंत्रता,

वैरमुत्तु - भूमि पर आए नव शताब्द हे!,

गुजरती कविता:

उमाशंकर जोशी - वर दे इतना, छोटा मेरा खेत,

संस्कृति रानी देसाई - ढोल,

इकाई -4 L-10, T-3, **अंक 20**

कश्मीरी कविता:

जिंदा कौल - नाविक, मुझे और मेरे ग्रामवासियों को ले चलो,

चंद्रकांता - निष्कासितों की बस्ती में,

सहायक ग्रंथ -

1. रवीन्द्र नाथ की कवितायेँ - प्रकाशक - साहित्य अकादमी, नई दिल्ली,
2. गालिब और उनकी शायरी - सं० प्रकाश पंडित, राजपाल प्रकाशन, दिल्ली,
3. फ़िराक गोरखपुरी और उनकी शायरी - सं० प्रकाश पंडित, राजपाल प्रकाशन, दिल्ली,
4. मिर्ज़ा गालिब की जीवनी और शायरी - WWW. Freehindipdfbook..com

GENERIC ELECTIVE COURSE (GEC)

सामान्य (Generic) ऐच्छिक पाठ्यक्रम

त्रिवर्षीय स्नातक हिंदी सामान्य पाठ्यक्रम (कोर कोर्स)

HINDI (PROGRAMME) CORE COURSE (CC)

COURSE GEC-2 [Credit - 6] (L - 5, T - 1)

[व्याख्यान : 14 X 5 = 70 (5 क्रेडिट) शिक्षण 14 X 1 = 14 (1 क्रेडिट)]

Total Marks-100 (Th-80+IA-20)

पाश्चात्य दार्शनिक चिंतन एवं हिंदी साहित्य

पश्चिम में साहित्य चिंतन की सुदीर्घ परंपरा को विद्यार्थियों के लिए सहज, ग्राह्य रूप से सुलभ कराने की दिशा में प्रस्तुत पाठ्यक्रम एक महत्वपूर्ण प्रयास है। विश्लेषण पद्धति , नई समीक्षा, विभिन्न वाद , इस पाठ्यक्रम का प्रमुख आकर्षण है। भारतीय काव्यशास्त्र के साथ-साथ पाश्चात्य काव्यशास्त्र के बारे में भी जानना आवश्यक है। इसमें विद्यार्थी विभिन्न विद्वानों के द्वारा दिये गए सिद्धांतों के साथ पाश्चात्य काव्यशास्त्र के स्वरूप के बारे भी समझने में सक्षम होंगे।

इकाई -1 L-17, T-3, **अंक 20**

अभिव्यंजनावाद,
स्वच्छंदतावाद,

इकाई -2 L-17, T-3 **अंक 20**

अस्तितत्ववाद,
मनोविश्लेषणवाद,

इकाई -3 L-18, T-4 **अंक 20**

मार्क्सवाद,
यथार्थवाद,

इकाई -4 L-18, T-4 **अंक 20**

कल्पना, बिंब, फैंटेसी, मिथक, प्रतीक,

सहायक ग्रंथ:

1. भारतीय एवं पाश्चात्य काव्यशास्त्र - गणपति चंद्र गुप्त, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद,
2. भारतीय, पाश्चात्य काव्यशास्त्र तथा हिंदी आलोचना - डॉ0 रामचंद्र तिवारी , विश्वविद्यालय प्रकाशन , वाराणसी,
3. भारतीय और पाश्चात्य काव्यशास्त्र- डॉ0 अर्चना तिवारी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी,
4. पाश्चात्य काव्यशास्त्र - डॉ0 भगीरथ मिश्र, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी,
5. पाश्चात्य काव्यशास्त्र के सिद्धान्त - गणपति चंद्र गुप्त, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद,
6. पाश्चात्य काव्यशास्त्र -- आचार्य देवेंद्र नाथ शर्मा, मयूर प्रकाशन, नई दिल्ली,
7. हिंदी आलोचना का विकास - मधुरेश, सुमित प्रकाशन, इलाहाबाद,
8. उत्तर आधुनिकता और उत्तर संरचनवाद -डॉ0 सुधीश पचौरी, प्रवीण प्रकाशन, नई दिल्ली,

त्रिवर्षीय स्नातक हिंदी सामान्य पाठ्यक्रम

B. A. - HINDI (PROGRAMME) 3rd - SEMESTER

COURSE MIL-1 [Credit - 6] (L - 5, T - 1)

[व्याख्यान : 14 X 5 = 70 (5 क्रेडिट) शिक्षण 14 X 1 = 14 (1 क्रेडिट)]

Total Marks-100 (Th-80+IA-20)

हिंदी **भाषा और व्याकरण**

भाषा दो व्यक्तियों के बीच संप्रेषण की माध्यम है। भाषा के बिना मनुष्य गूंगा है। जीवित प्राणियों में एक मनुष्य ही ऐसा है जो अपनी भाषा को संरक्षित रखा है। मनुष्यों में भी अलग-अलग देशों , प्रदेशों और प्रदेशों में भी अलग-अलग क्षेत्रों की अपनी भाषा होती है। ऐसे परिस्थितियों में मनुष्य इशारों की सहायता से अपना काम चलाता है , लेकिन उसे भाषा की संज्ञा नहीं दी जा सकती है। इस पत्र में भाषा की विशेषताओं पर प्रकाश डाला गया है। व्यक्ति जब भाषा का प्रयोग करता है तो उसे कई प्रकार की कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है , जैसे- उच्चारण की समस्या, लिंग निर्धारण की समस्या, वाक्यों के गठन, संप्रेषण। इसी बात को ध्यान में रखकर इसे पाठ्यक्रम में स्थान दिया गया है।

इकाई-1 L-18, T-4 **अंक - 20**

भाषा की परिभाषा - प्रकृति, एवं विविध रूप, हिंदी भाषा की विशेषताएँ,

इकाई-2 L-18, T-4 **अंक - 20**

हिंदी की वर्ण व्यवस्था : स्वर एवं व्यंजन - प्रकार एवं प्रयोग, ऊष्म, अल्पप्राण, महाप्राण, घोष , अघोष,

इकाई-3 L-17, T-3 **अंक - 20**

शब्द व्यवस्था : संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया, विशेषण, उपसर्ग, प्रत्यय, संधि, कारक, शब्दस्रोत : तत्सम , तद्भव, देशज, विदेशज/आगत,

इकाई-4 L-17, T-3 **अंक - 20**

वाक्य व्यवस्था : वाक्य, उपवाक्य - स्वरूप एवं भेद,

सहायक ग्रंथ :

1. हिंदी व्याकरण और रचना - डॉ० वासुदेव नन्दन प्रसाद, भारती भवन, पटना,
2. हिंदी भाषा- डॉ० हरदेव बाहरी, अभिव्यक्ति प्रकाशन, इलाहाबाद,
3. हिंदी की प्रकृति और शुद्ध प्रयोग - ब्रजमोहन,
4. भाषा शिक्षण - डॉ० रवीद्र नाथ श्रीवास्तव,
5. हिंदी का विवरणात्मक व्याकरण - डॉ० लक्ष्मी नारायण शर्मा,
6. हिंदी भाषा - डॉ० भोलानाथ तिवारी, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली,
7. ऐतिहासिक भाषा विज्ञान और हिंदी भाषा - रामविलास शर्मा, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली,
8. हिंदी भाषा, व्याकरण और रचना - अर्जुन तिवारी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी,

त्रिवर्षीय स्नातक हिंदी सामान्य पाठ्यक्रम

B. COM. - HINDI (PROGRAMME) 3rd - SEMESTER

COURSE MIL-1 [Credit - 6] (L - 5, T - 1)

[व्याख्यान : 14 X 5 = 70 (5 क्रेडिट) शिक्षण 14 X 1 = 14 (1 क्रेडिट)]

Total Marks-100 (Th-80+IA-20)

हिंदी भाषा और व्याकरण

भाषा दो व्यक्तियों के बीच संप्रेषण की माध्यम है। भाषा के बिना मनुष्य गूंगा है। जीवित प्राणियों में एक मनुष्य ही ऐसा है जो अपनी भाषा को संरक्षित रखा है। मनुष्यों में भी अलग-अलग देशों , प्रदेशों और प्रदेशों में भी अलग-अलग क्षेत्रों की अपनी भाषा होती है। ऐसे परिस्थितियों में मनुष्य इशारों की सहायता से अपना काम चलाता है , लेकिन उसे भाषा की संज्ञा नहीं दी जा सकती है। इस पत्र में भाषा की विशेषताओं पर प्रकाश डाला गया है। व्यक्ति जब भाषा का प्रयोग करता है तो उसे कई प्रकार की कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है , जैसे- उच्चारण की समस्या, लिंग निर्धारण की समस्या, वाक्यों के गठन, संप्रेषण। इसी बात को ध्यान में रखकर इसे पाठ्यक्रम में स्थान दिया गया है।

इकाई-1 L-18, T-4 **अंक - 20**

भाषा की परिभाषा - प्रकृति, एवं विविध रूप, हिंदी भाषा की विशेषताएँ,

इकाई-2 L-18, T-4 **अंक - 20**

हिंदी की वर्ण व्यवस्था : स्वर एवं व्यंजन - प्रकार एवं प्रयोग, ऊष्म, अल्पप्राण, महाप्राण, घोष , अघोष,

इकाई-3 L-17, T-3 **अंक - 20**

शब्द व्यवस्था : संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया, विशेषण, उपसर्ग, प्रत्यय,संधि, कारक, शब्दस्रोत : तत्सम , तद्भव, देशज, विदेशज/आगत,

इकाई-1 L-17, T-3 **अंक - 20**

वाक्य व्यवस्था : वाक्य, उपवाक्य - स्वरूप एवं भेद,

सहायक ग्रंथ :

1. हिंदी व्याकरण और रचना - डॉ० वासुदेव नन्दन प्रसाद, भारती भवन, पटना,
2. हिंदी भाषा- डॉ० हरदेव बाहरी, अभिव्यक्ति प्रकाशन, इलाहाबाद,
3. हिंदी की प्रकृति और शुद्ध प्रयोग - ब्रजमोहन,
4. भाषा शिक्षण - डॉ० रवीद्र नाथ श्रीवास्तव,
5. हिंदी का विवरणात्मक व्याकरण - डॉ० लक्ष्मी नारायण शर्मा,
6. हिंदी भाषा - डॉ० भोलानाथ तिवारी, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली,
7. ऐतिहासिक भाषा विज्ञान और हिंदी भाषा - रामविलास शर्मा, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली,
8. हिंदी भाषा, व्याकरण और रचना - अर्जुन तिवारी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी,

त्रिवर्षीय स्नातक हिंदी सामान्य पाठ्यक्रम

B. A. - HINDI (PROGRAMME) 4th - SEMESTER

COURSE MIL-2 [Credit - 6] (L - 5, T - 1)

[व्याख्यान : 14 X 5 = 70 (5 क्रेडिट) शिक्षण 14 X 1 = 14 (1 क्रेडिट)]

Total Marks-100 (Th-80+IA-20)

हिंदी गद्य एवं पद्य

आधुनिक भारतीय भाषा के रूप में यह विषय पढ़ाया जाएगा। इस पत्र में भक्तिकालीन निर्गुण औए सगुण दोनों धाराओं के कवियों को रखा गया है। कबीर अपने समय की सामाजिक बुराईयों पर प्रहार करने वाले कवि है , तो तुलसीदास मर्यादित और सांस्कारिक कवि के रूप में जाने जाते है। रसखान मुसलमान होकर भी कृष्ण की भक्ति में रंगें नजर आते है तो भूषण रीतिकाल में आदिकालीन प्रवृति को जिंदा रखने के लिए विख्यात है। निबंध और कहानी आधुनिक साहित्य की महत्वपूर्ण विधा है ; जिससे छात्र अवगत होंगे। दृश्य काव्य के रूप में आधे-अधूरे नाटक को भी स्थान दिया गया है ; जिसमें मध्यमवर्गीय मानसिकता को दर्शाया गया है। जहां व्यक्ति की पहचान परिवार नहीं प्रतिष्ठा और पैसा है। छात्र शहरीकरण से होने वाले नुकसान से भी परिचित होंगे। इसी बात को ध्यान में रखकर इस पत्र को पाठ्यक्रम में रखा गया है।

पाठ्यपुस्तक- 1. काव्य सुषमा - सं० सत्यकाम विद्यालंकार, नया साहित्य, कश्मीरी गेट, दिल्ली,

2. गद्य फुलवारी - संपादक मण्डल अध्यक्ष - शहाबुद्दीन शेख, राजपाल एण्ड संस, कश्मीरी गेट , दिल्ली,

इकाई-1 L-18, T-4 **अंक - 20**

प्राचीन कविता -

कबीर के दोहे - संख्या - 1, 2, 3, 4, 5, 6, 7,

तुलसीदास के दोहे - संख्या - 1, 2, 3, 4, 5, 6, 7,

रसखान के पद - संख्या - 1, 2, 3,

भूषण के कवित्त - संख्या - 1, 2,

इकाई-2 L-18, T-4 अंक - 20

आधुनिक कविता -

हिमालय के प्रति - रामधारी सिंह 'दिनकर',

पोस्टर और आदमी - सर्वेश्वर दयाल सक्सेना,

बिजलियाँ गिरने नहीं देंगे - महेंद्र भटनागर,

इतिहास : विकृत सत्य - गिरजा कुमार माथुर,

इकाई-3 L-17, T-3 **अंक - 20**

निबंध - कहानी

गपशप - नामवर सिंह (निबंध)

मैं धोबी हूँ - शिवपूजन, (निबंध)

आतिथ्य - यसपाल , (कहानी)

अकेली - मन्नू भण्डारी , (कहानी)

इकाई-4 L-17, T-3 **अंक - 20**

नाटक -

आधे-अधूरे - मोहन राकेश,

सहायक ग्रंथ :

1. आधे-अधूरे - मोहन राकेश, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली,
2. प्राचीन प्रतिनिधि कवि - द्वारिका प्रसाद सक्सेना, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा,
3. आधुनिक प्रतिनिधि कवि - द्वारिका प्रसाद सक्सेना, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा,

त्रिवर्षीय स्नातक हिंदी सामान्य पाठ्यक्रम

B. COM. - HINDI (PROGRAMME) 4th - SEMESTER

COURSE MIL-2 [Credit - 6] (L - 5, T - 1)

[व्याख्यान : 14 X 5 = 70 (5 क्रेडिट) शिक्षण 14 X 1 = 14 (1 क्रेडिट)]

Total Marks-100 (Th-80+IA-20)

वाणिज्यिक हिंदी

यह पाठ्यक्रम वाणिज्य के विद्यार्थियों को ध्यान में रखकर बनाया गया है। शुरू में गद्य विधा को रखा गया है। व्यापार में पत्रों का बड़ा महत्व है ; इस बात को ध्यान में रखकर पत्र-लेखन , खासकर व्यावसायिक पत्र को जगह दी गई है। पत्रलेखन में टिप्पण लेखन , मसौदा/आलेखन को भी जगह दी गई है। व्यवसाय का क्षेत्र बहुत व्यापक होता है , एक जगह से दूसरे जगह , एकभाषा क्षेत्र से दूसरे भाषा क्षेत्र में भी जाना पड़ता है , जहाँ अनुवाद की आवश्यकता होती है, इस लिए अनुवाद की आवश्यकता को देखते हुए अनुवाद पर विशेष ध्यान दिया गया है। व्यवसाय के लिए उत्पादन की आवश्यकता होती है और जब उत्पादन होगा तो बाजार चाहिए , और बिना विज्ञापन के आज बाजार में कुछ भी नहीं बिकता , इसलिए विज्ञापन की आवश्यकता को देखते हुए विज्ञापन पर ज्यादा ज़ोर दिया गया है। विश्वास है की वाणिज्य के विद्यार्थी इस पाठ्यक्रम से विशेष लाभान्वित होंगे।

पाठ्यपुस्तक - गद्य विविधा - सं० परमानंद गुप्त, राजपाल एण्ड संस, कश्मीरी गेट, दिल्ली,

इकाई-1 L-18, T-4 **अंक - 20**

बैलगाड़ी - 'बेढब' बनारसी,
मधुर भाषण - डॉ० गुलाबराय,
उड़ी हुई दीवार- केशवचन्द्र शर्मा,
नेता नहीं नागरिक चाहिए - रामधारी सिंह 'दिनकर',

इकाई-2 L-18, T-4 **अंक - 20**

पत्र लेखन : स्वरूप, प्रकार और महत्व,
व्यावसायिक पत्रों की विशेषता एवं प्रारूप ,
टिप्पण और मसौदा लेखन,

इकाई-3 L-17, T-3 **अंक - 20**

अनुवाद : स्वरूप, परिभाषा, महत्व एवं अभ्यास - (अँग्रेजी से हिंदी),
वाणिज्यिक एवं प्रशासनिक शब्दों का हिंदी से अँग्रेजी और अँग्रेजी से हिंदी अनुवाद ,

इकाई-1 L-17, T-3 **अंक - 20**

विज्ञापन : स्वरूप, प्रकार और महत्व,
विज्ञापन : क्षेत्र एवं विशेषताएँ ,
विज्ञापन का नमूना,

सहायक ग्रंथ :

1. प्रयोजनमूलक हिंदी की नई भूमिका - डॉ0 कैलाशनाथ पाण्डेय, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद,
2. प्रयोजनमूलक हिंदी : सिद्धान्त और प्रयोग - दंगल झाल्टे, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली,
3. प्रयोजनमूलक हिंदी : सिद्धान्त और व्यवहार - डॉ० रघुनंदन प्रसाद, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी,
4. अनुवाद विज्ञान - डॉo राजमणि शर्मा, हरियाणा साहित्य अकादमी, पंचकुला, हरियाणा,
5. आधुनिक विज्ञापन : कला एवं व्यवहार - डॉo अर्जुन तिवारी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी,